भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1470

20 सितंबर, 2020 को उत्तरार्थ

विषय: संतरे की खेती

1470. श्री संजय सदाशिवराव मांडलिकः

श्री बिद्युत बरन महतोः

श्री श्रीरंग आप्पा बारणेः

श्री सुधीर गुप्ताः

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) देश के संतरा उत्पादन करने वाले शीर्ष राज्यों तथा वहां पर होने वाली नारंगी की खेती के अंतर्गत शामिल भूमि क्षेत्र का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या देश में संतरे के उत्पादन में गिरावट आ रही है;

(ग) यदि हां, तो विगत तीन वर्षों और चालू वर्ष के दौरान तत्संबंधी इस तरह की गिरावट का राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार ने संतरा उत्पादक राज्यों में संतरे की अधिक उपज और भंडारण के लिए कोई तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान की है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ङ) क्या सरकार ने देश में संतरे के उत्पादक किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) देश में संतरा उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए/उठाए जा रहे अन्य कदम क्या हैं?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

(क): तृतीय अग्रिम अनुमान 2019-20 के अनुसार, देश में संतरा (मेंडरिन ऑरेंज/किन्नू) के तहत कुल भूमि 4.79 लाख हेक्ट. है। संतरा उत्पादन में शामिल प्रमुख राज्य मध्यप्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, राजस्थान और हरियाणा है।

(ख) एवं (ग): जी नहीं, देश में सतरा उत्पादन में गिरावट का कोई ट्रैंड नहीं है, जिसे नीचे तालिका में देखा जा सकता है:-

(लाख टन में)

	2017-18	**2018-19**	**2019-20 (तृतीय अग्रिम अनुमान)**
अखिल भारतीय उत्पादन	51.01	62.43	63.97

(घ): एक केन्द्र प्रायोजित योजना समेकित बागवानी विकास मिशन को फल, सब्जी, कंद और मूल फसलों, मशरूम, मसाले, फूल, सुगंधित पौधे, नारियल, काजू और कोकोआ को कवर करने वाले बागवानी क्षेत्र के समग्र विकास के लिए वर्ष 2014-15 से कार्यान्वित किया जा रहा है। एमआईडीएच के तहत सभी राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को शामिल किया गया है।

इस मिशन में विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से फल और सब्जियों सहित बागवानी फसलों के उत्पादन और उत्पादकता सुधार की परिकल्पना है। एमआईडीएच के तहत, रोपण सामग्री के उत्पादन, सब्जी बीज उत्पादन, उन्नत खेतिहरों के साथ क्षेत्र का कवरेज, जीर्ण बागानों का पुनरूद्धार, संरक्षित खेती, जल संसाधनों का सृजन, समेकित कीट प्रबंधन (आईपीएम) को अपनाया जाना, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (आईएनएम), जैविक खेती जैसी गतिविधियों के लिए सहायता प्रदान की जाती है जिसमें फलों और सब्जियों के विकास के लिए जैविक आदानों का स्वस्थाने उत्पादन करना शामिल है।उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए किसानों और तकनीशियनों का क्षमता निर्माण किया जाता है।

इस मिशन के अंतर्गत फसलोपरांत प्रबंधन सहित बागवानी के विकास से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए सहायता भी प्रदान की जाती है। पैक हाउस, प्री कूलिंग यूनिट, शीत भंडारण, मोबाईल प्री कूलिंग यूनिट, शीत कक्ष (स्टैगिंग) प्राथमिक/मोबाईल/अति सूक्ष्म प्रसंस्करण यूनिट, पकाने वाले चैंबर, बाष्पीकरणीय/कम उर्जा शीत चैंबर, कम लागत संरक्षण यूनिट, कम लागत प्याज भंडारण ढ़ांचा, पूसा शून्य ऊर्जा कूल चैंबर की स्थापना सहित फसलोपरांत प्रबंधन के विकास के लिए परियोजना की पूंजीगत लागत के 35 प्रतिशत (सामान्य क्षेत्रों के लिए) की दर से और 50 प्रतिशत (पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों के लिए) की दर से सब्सिडी सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के उद्यमों के लिए उपलब्ध है।

(ड.): आईसीएआर- केन्द्रीय सिट्रस अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने जानकारी दी है कि इसमें विभिन्न प्रौद्यगिकी आधारित कार्यक्रमों के विस्तार/स्थानांतरण के अंतर्गत पूरे देश के आधार पर ज्यादा से ज्यादा 42,634 सिट्रस उत्पादकों और 2449 अधिकारियों को अब तक प्रशिक्षित किया है। पिछले पांच वर्षों के दौरान पूर्वोत्तर और हिमालयी (एनईएच) क्षेत्र के लिए प्रौद्योगिकी मिशन (एमएम-I) के अंतर्गत केन्द्र ने कुल 20 प्रशिक्षण कार्यक्रम (5-ऑन कैंपस और 15 ऑफ कैंपस) आयोजित किए जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र के 8 राज्य कवर हैं जहां संबंधित राज्य सरकार के अधिकारियों और फील्ड कार्यकर्ताओं को "रोगमुक्त रोपण सामग्री का उत्पादन" और 'सिट्रस पुनरूद्धार' पर प्रशिक्षण दिया गया था।

(च): आईसीएआर- केन्द्रीय सिट्रस अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने जानकारी दी है कि इन्होंने वर्ष 2003 से सिट्रस का 7.00 लाख रोपण सामग्री का उत्पादन किया है और इससे स्वास्थ्य मदर स्टॉक का विकास करने के लिए 3000 सिट्रस उत्पादकों और 16 सिट्रस उगाने वाली राज्य सरकारों को वितरित किया है।

******